

3

आम वसुधै कुर्वतु मातुः	
786	

ASHA ARCHIVES

धर्म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॥ जर्मजय उवाच ॥ ॥ द्वादश लव शुभ
त्यन्य नग न्यवहारी नायनि गुन नापि च नाना जर्मज यमहावलि ॥ ॥ राजा ज
र्मजय नग्न कलिखिखनेयनि सकया धनायाका उरु मविशानहमिनायनि धाया
गुलिनाय द्वादश लव गुहानिकेत्यतिरुलला ध्यय मया राजा रुधिहि नया खे संयु
विमानक कस्य विद्या यमालधकं लिखिखनेयनि सकं राजा जर्मज यनयि नाययान
॥ १ ॥ कविमागनपनधर्मजानि रुधिहि लवुव सर्वहिना सुख कथजखम रुम

ना ॥ ॥ रुलिखिखनेयनां च लयाल सकं विनतियाका रुयानि निमि नध मचलुल
नयन विद्यान रुधिहि नत्वंग थिदुधाल साधम मालध मखरा उधर्म वित मम रुम
रुज उरुतिरुयाज विद्या कथा थिदुध राजा रुधिहि नया के धर्म चलुल रुयाया ख
संयुक्त म विद्याय माल रुगुन रुलयाल सन माल सया उ विद्या ककः थिदु
म रुलयाल सन धर्म चलुयाय माला दयक म विद्याय मालधकं विमया ययि
खन सकं राजा जर्मज यनयि नाययान ॥ २ ॥ ॥ विसंयाय उवाच ॥ ॥ सुना राजा

पवजामिकथं वामिनसंभय यक कार्य सवय वस्व ॐ आ देवा सवमनि ॥ ॥ ॥
 जा जर्मि जय न ज्ञा का स्वदे दा डी वे सं पाय त्रिषी खन ने अस्माद यक स्य विद्यातं इमा
 हा ना जा च्छल पाल स्य न दे न सि आश लका डी जिन के न दे स विद्या रु ने ॐ बुद्ध स्य त्रिषी
 स्वत द सं व लोक या स म सं स्व ज्ञा य द रु ने ॥ ३ ॥ वस्मादि निषय सव विद्या व य गुला
 वृ नि वि वि द व स मा रु का ल वि च दु वि ना य क ॥ तथा स न च ति गंगा क ल्य च लो कः
 थ म्नि तं ग म् च चि च ग ना स व व न स्य ति क गु र व न् ॥ वस्मादि नि वि स्य त्र वि द्य च द

स्य विनायक ॥ अत्र सति गंगा जने क प्रा क य नि स र म न के स र लो क स क न सं नान
 य अ पि स्य त्र मा हा त्र ड नू म क्कान या ण डी थ्व ख जिन थ्व य ल स द्दो डी नया जिन क
 न दे स विद्या रु ने ध के वे सं पाय अ वि स्य त्र न त्रा ज ज त्म ज य क र्म ॥ ४ ॥ ना न ड ड वा च
 ॥ दे व स सं क ज्ञा ना म वस्मा वि द्यु म ह स्य त रु धि छि त्र ग ना त्रा ज न र रु ध र वि द्य गी ॥
 ॥ दे वे ज्ञा वस्मा वि द्यु म ह स्य त थ्व स कः न ज्ञा न ज रु धि छि त्र डी ज्ञा न स ड ड ड म डः
 आ डी य स वा द म ड डी यि डी य रि डी म स र रु ध र वि द्य व र्म मान स म क्क या द वि द्य क थ

धर्म

धिरुक्तनाशरुधिरुक्तिः ॥ १ ॥ सत्यवर्धितिक्रीधधर्ममिलयुवतं तस्य मय
समानमिधर्मयुगुधिरुक्तिः ॥ ॥ रुनेत्राश्रुधिरुक्तिर्लगाधिरुधमसामाह उ
कुरुसत्यजसत्यवमहाकनसकागिमहडाधर्मज्जामाधर्ममिलधर्मम्वलडासत्यवच
नसममंराश्रुधिरुक्तिडाज्ञानमदूयथनंथकाधर्मयुगुधिरुक्तिरुला ॥ ३ ॥ विरुक्तिर्व
रुतिर्विचन्द्रवराचनवतिरथाननघावस्यमानधामासमादृशाश्चरुद ॥ ॥ रुनेम
लगधिनंधालसाविष्णुवावसलथंनजधालसाचन्द्रमायातिर्नतेकुथलपत्राक्रम

धालसावराचनथंविनधालसावलिराज्ञाथंसममज्जयतिचादविडांधालसापिथी
मानाथंरुगंरुगपीतंउथंराश्रुधिरुक्तिनयोधर्मसत्यमवाहं ॥ १ ॥ तस्यतस्यसमा
नामिह्यनसत्यनकरवेनपुर्वंमुखानतावाकधर्मयिरुधपप्रिर्ण ॥ ॥ राश्रुधिरुक्ति
यातिडासत्यवमर्त्यामेदूखजसत्यवलाकनंमध्यमलुलसमनकुलीकनंपानाल
सनागलाकनंशीरवन ॥ संराश्रुधिरुक्तिनधकाडाधर्मसाहाखमिशुलं ॥ २ ॥ कनरुध
नयहंमानापूराधिरुक्तिविचिगुधर्मराजखज्जगतासामिहिल ॥ ॥ यडुलिन

पनजिडा नधकाडा धर्मन रा लयाडा विष्णुतं पिथि विमसुन्दर नयन राजशुचिस्मिता
 चरित्र सुय निमिस्मिने चिकलपाडा विष्णुतं ॥ ८ ॥ निवर्तु रत्राशुदं जायति रुधिहि
 नधर्मचक्षुल नयन पुनराज निमिस्मिता ॥ ॥ धर्मराजशुचिस्मिता नयन संयुक्त रुधि
 वलसंराजयति अजिजि वगुत्रियन डानधकाडा धर्मचक्षुत्रया लपनजि कश्चालर
 याडा विकानन स्वयंतयं मययाप कधन थधिदुनयन रुधिस्मिता राजशुचि धर्मचक्षुत्र
 रसाडा डान ॥ १० ॥ उच्छासाद वेला कश्चु पायचरुहिनायत्रि अत्राकं पत्रि सर्वः धाम

चमिस्मितायन ॥ ॥ धर्मधर्मचक्षुलदवत्राकनैयाकनडा धर्मन लिह्मिनायत्रिदस
 धर्मनदस स्वय विष्णुतंदस अक्षुगधिदधाल सादुचिनं सा रायमान रुयाडा धादरुमि
 धाल साविदलमनिनमियाडा नयाधुधाल सा सुवर्धु सत्रधनरायाडा दका डानयाथं
 थधिदुच्छे लस्वादात्रपति सुन्दर सुन्दरिलुखानी प्रस्वाडा धादः हिमि मधुप सगलरु
 ले अनक चिगु विचिगुन रायाडा नयाथं धादः थधिदुदस ॥ ११ ॥ नित्तं लवियल
 अक्षु प्रिया प्रियानतद सन रवनमन लो कश्चुपुसं सा नवदधुतं ॥ ॥ धर्मनदस

धर्म चिदधालसा निमलमादात जिमिर्द्ध र मिथामयि जाश्यागुलि स्ययद् ॥ १ २ ॥ ग
 फकाच नवनानं नमि कानि सप्तपुः यद्वा सा ह्यां सभा अनि सूर्य कोति सप्तपुः ॥
 १ ॥ दनं गाथिदधालसा मिमनिपोलपाक के या शुवद्वा या सिनैत जलाक सूर्य कोतिः
 नडा या सिनैत जलाक काकन धालसा कोमलन धालसा पूर्व माप्तिराच नु मा थ्यं ॥
 जिका नि सप्तपुः थिद ध्वरु मि नापि त्रिदसे ॥ १३ ॥ मा ग द्वा स या फे व पुति
 हानं य च्छतां व क स्य द ह्वन स्रुः ॥ नु वा के नि पु व विग ॥ ॥ धर्म व धु ल न न

डारम डी स्यवान राजा है या क स थनः हाय हाय ग चिदध स थगन थिदध स
 मवदा यज्ञ पुरुष या थ स थ ध के धर्म न जा ह्वा दनं ॥ १४ ॥ पूर्व व क न द
 स म्प्री सर्व मा ह्वा विहा न द न जा का ज प न क न पुति न द हा स तां ॥ ॥ द न ध
 म च धु ल ख सि ह ल वि क या न ग थ थ स थ वि क या ह्वा मि नि के ह ल ला जा सा न
 डा ध द न जा या थ स मि के ह ल ला अणि न हि द ध का डा ध म च धु ल ख सि ह ल
 ॥ १५ ॥ हि म स्य न ड वा च ॥ ॥ क नो वा गा था प त क नो वा पि स मा ग म म जा

धर्म

नैर्नवनज्ञानमिहृधिहिरण्यमयिल ॥ ॥ थक्कचधुनराजदानमनियसवाहुरि
मस्यनमग्राह्यदत्तं दयुनकृगनमडावागुलि थासुनडायाधकंदनं कृनज्ञान
कृजिनमसिया कृगथराजदानमडाया हृधिहिरण्यार्थिं कृदक्यवानडायाधका
डाहिमस्यनमस्तु ॥ १७ ॥ नैराकस्वविधौ धानाधर्मयुगस्यमहिलंकसात्तेव
नज्ञानमिहृधिराजदानमसागना ॥ ॥ हनहृधिहिरण्यगधिदधालसाधुत्रसदवला
कनं मध्यमनुममन्षलाकनं पातालसनागतकनं ग्रीहवनसुडाधनकाडायाग्रा

जदानमनुनानकथनडायाधाल कृनवानस्यनयज्ञास्थमरुयापुदनकृन
गथमडातनायासुनानकनधकाडाहिमस्यनं चाल ॥ ११ ॥ चक्षुलडवाच ॥
॥ रंदिमदस्यग्राह्यार्थं मध्यमदस्यदायक्य दानालोयानमदस्यतैलाकसच
लचनं ॥ ॥ रिमसुननग्राह्यदकृदनधनकाडाचक्षुलनवातोरिमस
नमाहाग्रापूयदकवादेकनालयिथ्यादिनग्राजनर्दितायदयिहामैद्ययानन
डाहृलेमिमनिग्राजनगायदयिडायातानदानयाफामदग्रीहवननीतायदयिडा

धर्म

रुपिडागिनमसियानिधकाडाहिर्मस्यनमनैधालं ॥ २१ ॥ वक्षुलस्यसुखद्वत्वास
धर्मपिवास्कुलपन्दीसंहावनंयवसुवेलासस्त्राविधियत ॥ ॥ हिर्मसिमेमन
धालंधधर्मवक्षुलयास्वालासायासागुनहिर्मस्यनयाधर्मचित्तत्यगिरुलदुनैधि
थिउग्राउगुनःचाकाडाअंतदनचालं ॥ २२ ॥ हिर्मगुयपायंकागननथासपानवि
जियतसुअसमनविवजित ॥ ॥ हिर्मसमनधालंधवक्षुलकनकस्वद्वयाजात
कतास्यमहडलककरवगमधुदलाजिलिडाकनचालसुहृपसुप्राजनसकलस्यन

हिर्मगुयंउगुनुहललाजलजनुधनिरुकोमसुअनकर ॥ २३ ॥ वक्षुलउवाव ॥
जिन्यकीपभुसमनम्यकत्वाचमासम्यकंभुखइस्वमलमनयीयधुयिन्दिमकनत्वक
धंवक्षुवतुहवेत ॥ ॥ धर्मवक्षुलानधालंधमालयालाहिभुस्वइस्वमलमनदानी
यिन्दीयसंहालयाडेगिजातयताधालधगथइयिडा ॥ २४ ॥ उलधयगध्वनिध्वव
कनध्यादयलागिनाचचालाकनचक्षुनागानिचक्षुलापक्रम ॥ ॥ हिर्मस्यनध्व
इयकदेकाडाधर्मवक्षुलानधालंधमालनागालिर्मस्यनचक्षुलधायवक्रदवगु

चाम

धर्म नृणां श्यादिन श्रुनकनिश्चया कश्च नृपतृष शिस्तमिह नृक कडा क रिद गुलिवहुक
द डाल दिनिमं प स न ल ड पि पू र्व लि थ धि व व ह के स न क क म व या द व य त ल
पु क्क ध्व त रं प ना या क क्क ज्ञा न ट पं ड ना थ्व क्क च न्द ल धा यो ॥ २७ ॥ त्रि स म्भा च द थार्य स्य व
दि य स्य प लं म स्य क्रिया दि न स्य श्र वि प्रा श्र वि पि च न्द ल उ च न ॥ ॥ रु नं व क्क धा ल सा वा
क्क न रु या ड स्य धा ल स म्भा म या क क्क धं द कि ला क त म स ड थ्व क्क च न्द ल धा यो ॥ २८ ॥
द न भू चि वि ना श क पा द प ल ज्ञा वि ना श्र द्धि व वि द स्य स्य पि च न्द ल उ च न ॥

हुनं स्वस्मलसा लो नन या यथा तदकमुचि मया कक उति मसिक कक द अपूजा इ मनति
 र्थवा नि अने म द अ क द त्रिदु ख द अ दया म इ क थ क च लु ल धय ॥ १० ॥ कपिला
 जिल पा न वा क नि ग म न च य द क ल वि च त्र न ध पि च लु ल उ च न ॥ ॥ हुनं
 स्व स्मलसा सि। यि अ सा या इ इ का द क व न क नि अ क द या क क व द या आ ख ल
 वि चाल म या क क थ क च लु ल धय ॥ ११ ॥ कु म ना स म् म क ग द ह न न द
 ग्रा ह यि च क वि प्र। स्व पि च लु ल उ च न ॥ ॥ मा हा इ ख न स्व क न क या अ च द क

धर्म रूपावच्छालधकधर्मवच्छालनधर्म ॥ ३१ ॥ पंक्तिनांकावच्छालपञ्चुनां वच्छाल
 गधरुगतिनांकावच्छालसर्ववच्छालनिन्दक ॥ ॥ पंक्तिमकारवच्छालपञ्चुमगध
 वच्छालमनूयासकावच्छालसमस्तयातिनवच्छालथप्रकर्मनालताजमवयाकर्म
 याकर्मसमस्तनिन्दयाकर्मथथकावच्छालधायजिचच्छालयाकुलसज्जकर्मरुका
 कायावच्छालकर्मशुद्धाविनानजिनमयाकाजिच्छावच्छालधायनिहनिहानपाल
 राजाशुधिहिनयाकवच्छालकर्मद्वामस्वाकृद्नापलाकविद्याहनेधकधकाकिने

धर्मवच्छालनधायश्वहिर्ममनवदकाजधरुमस्यलालपाजराजाशुधिहिनयास
 नियमजकाजहिममनवधियनाययार्गहमाहा राजाशुधिहिनहिमिद्वामस्वाकृद्
 वच्छालननाकास्यधमस्वज्ञककुलपालमननायलायिठलानायलाकाजहिमि
 सदाखनहमस्वयमननासाहानसिलजमनायलाकानकृद्खनधर्महिमम
 नेच्छुशुधिहिनमाहा राजायाजग्रामयिनाययार्ग ॥ ३२ ॥ शुधिहिनउवाच ॥
 हिममनामाहावाहाकिमर्थजगत्स्वयत्वंकिंकाह्यनामनस्यतनावाक्यनिवदय

धर्म ॥ ॥ राजा हृदि स्थितः हिमस्य न हानं हृदि सप्तन च न च ध्यान धनं डाय आ
 मोषा वरुह कोला जूमीयाना मकु च ध्यायान धनं डाल च का डी राजा हृदि स्थितः
 हिमस्य या क डे धो ॥ ३९ ॥ हिमस्य न ड वाचं ॥ ॥ भू नू राजा नू यथा वृत्तया
 १३ दस कया मय हृदय मलो जगमा दाने जथा वाक्क निव ययता ॥ जने क र्थ मयं दत्तानं १३
 मातस्य म हात्मन्य अति र्थ जगमा दाले जनि वा ध्यान ला धिषा ॥ ॥ हिमस्य न व
 राजा हृदि स्थितः या क यि नाय यानं ह मा हा राजा हृदि स्थितः विमान क ह विद्या ह न गथ

डाने जगमा दाने जथा वाक्क निव ययता ॥ जने क र्थ मयं दत्तानं १३
 मातस्य म हात्मन्य अति र्थ जगमा दाले जनि वा ध्यान ला धिषा ॥ ॥ हिमस्य न व
 राजा हृदि स्थितः या क यि नाय यानं ह मा हा राजा हृदि स्थितः विमान क ह विद्या ह न गथ
 डाने जगमा दाने जथा वाक्क निव ययता ॥ जने क र्थ मयं दत्तानं १३
 मातस्य म हात्मन्य अति र्थ जगमा दाले जनि वा ध्यान ला धिषा ॥ ॥ हिमस्य न व
 राजा हृदि स्थितः या क यि नाय यानं ह मा हा राजा हृदि स्थितः विमान क ह विद्या ह न गथ

धर्म

१४

सहजं कंच असादात्तसंवादचक्षुलयावगाधिदधकं राजाहृदिहिननहिमात्यन
याकेदनी ॥ ४१ ॥ हिमस्यनउवाच ॥ ॥ काककाकिलवहृत्ताकेनृपलकला
चनलवर्गावमृदुकेसंवाकेश्ववमधनता ॥ ॥ गायिदखालेखालेसकखथ्य
हाकंसलधालसाककिलयाथं हिदवेचनकमिथं वाक् ॥ ४२ ॥ हिधिहिन
उवाच ॥ गच्छगच्छइतावालिवाहृलापापकेमनाअद्विदाममवक्त्र
कथनस्यगृधमागता ॥ ॥ असाउअमइलावालिथकाअसायामनवहृल

१४

असामस्ययक्ततादानथकागथनमिजिसकउलधकाअराजाहृदिहिननअहा
दनी ॥ ४३ ॥ हिमस्यनउवाच ॥ ॥ अतिथिआगतादात्रकृनंगस्यकियेचुतिः
रुथासकनथादानपंथकपिमिधियरु ॥ ॥ अतिथिथउक्तसउअमयाक
लहिलविवालययक्तयथमरुकादानवियाउक्तयउक्तयाप्रमानथथथ
का ॥ ४४ ॥ नदस्यदस्यदस्यमुत्तानवकदचनमहाहृदामहालानुमस्यमस्य
नताधिय ॥ ॥ हुनथमपूवयवलनीमखकाथयाधिदखजिनठनमनका

४५

ध्याय्य वालवाल नमस्तस्मै नयाय जाय्य इति माहात्म्यं लिखितं जिनस्य ध्यायि
नापयादा धुका ॥ ४३ ॥ इति लिखितं उवाच ॥ ॥ कस्मिन् च श्रुत्वा त्वं दान्य कृतं वागु
हमागता ये ध्यातुं हृदयं वा कंठं वा वाक्यं निवेदयन्ता ॥ इति मय्येन च
१५ यानि मिमिक्षन् धनं उवाच श्रमाया वृत्तं सुकोला कथं धनं उवाच कंठं वा वा श्रुति
ननं धनं ध्याति खड्गनाडा इति मय्येन द्वात्रिंश उवाच उवाच लया कथनं ॥ ४३ ॥
चलल उवाच ॥ ॥ राजा वधूश्च वधना राजा च कुश्च कुर्वाणा पिता माता गुर्वन

कुर्वाणा कृत्या गुर्वु ॥ ॥ पातायि चि मइ क्रयायि सुमिहं राजा मिखा मइ क्रया
मिखां राजा मा मव वृमइ क्रया मा मव वृ राजा गुर्वु मइ क्रया गुर्वु तय मया ॥ ४४ ॥
इव लच वला राजा विद्यावाले च वाक्मन मख मवल मोन्यत्वं जगु तत म्क प्रा व
ले ॥ ॥ वल मइ क्रया वल राजा वाक्मनया वल विद्या मख या वल नान मजा
य ख्या वल रु म्क य ॥ ४५ ॥ वाला नालोदनं च व वहाया च चल वल पंक्ति
नां वल माका अंतिन ध उद क वलं ध म्क वल म्क य च्छुन हा पायन च्छुनी ॥

धर्म वाल स्वयावल रघच व्यायायावल चंचल ह्य पं क्रियावल अका सम दाया वल
 लं स्वसधम यावल सय दपा लवना ज्ञाया काय दं दं ॥ ४९ ॥ आमा धिर्न मया धि
 नं के धार्थ कन लेन न इ बल दिय दानं सहं रुल पाउ नयना ॥ जिन सा
 १५ स्य दा अमय का अमन या पित्वा सैं न का डां डां अक न ना लं न के न डायुं न इ बल
 मया दान विर स रुल सिं स्य ॥ ५० ॥ अयं व दिय न दानं अपु बलि ह्य पुन
 अनार्थ पि अं लु स काल को निरु ह्य लं लेन ॥ अपु वं हि स अति थिया

न दान याय यल पुत्र याक म इ रुलि मा हा द डायु ज्ञा याय अनर्थ नि म रु ह्य या अ
 रु म अग्नि स काल याय थ न या काने कति रु ह्य या क रु ल ले क ॥ ५१ ॥ हा विन
 हां क ल र्व व का थ न च ज्ञा द न अ वारु ल द पा उ वं व दि क न न ना धिया ॥
 आमा हा द व ड विरु न ह्य म न या अ थ वा रु ह्य या क रु ल विर य ला अ वी थ अ म
 ख न ना य ला य ला व के ॥ ५२ ॥ इ न धा जि य न रु नि अ ति थ ग रु मा ग न न स्य हा
 थ य ज्ञ न अ ति थ स व म ग म् ॥ ना यिन न नि थ न ड या म व या क स वी द

४३

अतिथिं यातां चिच्छेत्तज्जवय्यक्रयात्तथा प्रलामानं अतिथिनापलायिडाचकं
अतिथिनहिमात्यनया कथं ॥ १३ ॥ हिमासननचच्छ्रुत्वा लयावच्छेदात्तज्ज
श्रुतिमिच्छन्त्या अग्रसुविह्वलकरवियिनापयान् ॥ १४ ॥ स्थितिनिर्वाचनं ॥ १५
स्यैव वगुणनामिकां मिच्छन्त्या वगुणन अतिथिं श्रुत्वा द्वाप्रे कथं मिव पुपूष्यत्या ॥ १६
॥ यक्रयां क्रमं अत्र मयि यिडा चक्रं क्रमं मयि यिडा द्वाप्रे अतिथिं यातां चो
निडा चक्रं सगच्छया यधकं जमाचच्छ्रुत्वा कं कच्छकं हिमासननचच्छ्रुत्वा नया

११

११

कहिमासननदन ॥ १७ ॥ चच्छ्रुत्वा उवाच ॥ अत्र यातादिकं चैव कन्दमूल
रुत्तन्निचरथा च छुस्ति प्रापि अतिथिं च अदाय के ॥ अत्र यादिननाम
पदाथ मदिनन हसुत मिसावाम्भुवि वसु क अतिथिं यातवियाया रुत
नश्च अतिथिं ॥ १८ ॥ अतिथिं दाननिष्ठं नो ज्ञात्वा गुरुं वगुणन उदकं वा
सुता पित्रा उच्यते यमी सह जत ॥ ॥ द्वाप्रे अतिथिं यातां चच्छ्रुत्वा यातां
जामवित्त्यधमं नया उवाच निडा अत्र वमां अडा उल्ल्यालव सुतायानडा उल्ल्यालव

धर्म

॥ ७१ ॥ अति धविमूर्खं यति विमूर्खं पित्रुदवता कति पूज विन स्य नी व म्म ह्म
पद यद ॥ ॥ दाने स अति धनियो अ अति धनो विमूर्खया दाने स्वर्ग स चोद
पित्रु लोक विमूर्ख हलः कति पूजा या दाने रूल मद् पला खत ल्य ह्वं व म्म ह्म
लोक ॥ ७२ ॥ द वी चे स र्वा वदिनं सत्य दिनं दया क्थ विना अति धन रूल न पु
सर्व ज नि रूल ॥ श्री ना वा पि चा मु लो अ क् वा पि पु धान दं कं वा स द व स मी
प्रा नि अति धन रूल स कु म ॥ ॥ राजा म इ म्म या द व प र्जा अ ह्म म इ म्म या द या

अति अस्या गत मद् म्म या द रूल सम स थायं अरु संयं न्य यां नि रूल ॥ स्व रूल स म्म
रूल स म्म म व व रूल का अ चो द म्म रूल स अति धन रूल म्म अ अ अ न न य नं अ
अति धन अति धन रूल स म्म अति धन रूल ॥ ७३ ॥ न गत च गृ ह्म वा थ न द्या प क्क ल नि
नट अ प र्वा य स द्वा च ति धन रूल न रूल ॥ म नु दिन रूल न रूल अ द्वा च व ति
ल विन म्म व नि च य क न्या द रूल स फ म्म कूल ॥ ॥ न गत म्म स अ ध व ति ध
स अ पूर्व अति धन रूल अति धन रूल स म्म या द रूल लोक ॥ म नु म ति रूल न अ रूल

धर्म निविया ऊरु हा मल मय कपिथु थयान म्यानु मरु उ म्म मिमान ध्वनं नऊस
 गुलिरु म्म यायेडा ॥ ३८ ॥ नकु लावा थमा ऊला म्म त्रिवासान मुकनं ख मध्यपि
 सव्य स्य कनक पात्रेन मुहनि ॥ ॥ नडालचारु ठु खिवा चो हुल सनं रुशल स
 ना ज्ञा मध जग्य या मध नमू या थल स लजन या नकान समस्त मुच्च त्रिशिडा घ
 कं थव वा हुल या कंद डाडा हुल स चो डाडा, ता ज्ञा रुधि छित न ज्ञा दय क
 ली ॥ ३९ ॥ रुधि छित उवाच ॥ ॥ कथं उत्पद्यते धर्म कथं धर्म पुर्वरु न क

चथा पातधर्म कथं धर्म विन स्यति ॥ ॥ गृध्न धर्म दयिडा गृध्न धर्म धि
 वन चानिडा गृध्न धर्म नय गृध्न धर्म रुयिडा ॥ ४० ॥ अनिध उवाच ॥
 सत्य उत्पद्यते धर्म दया धर्म पुर्वरु न कुमाया था वगं धर्म को धर्म विन स्यति ॥
 ॥ सत्य धर्म दयिडा दयान धर्म धि वन चानिडा कुमान धर्म नय कुध्न धर्म
 रुयिडा ॥ ४१ ॥ रुधि छित उवाच ॥ ॥ को वा मिनु पद स्य च को वा मिनु गृह
 रूच को वा मिनु न्यथेडा को वा मिनु नालक ॥ ॥ पत्रद स्या मिनु वक्र कृया

धर्म

मिष्टुलाययामिष्टुवक्रमननकालयामिष्टु॥ ३४ ॥ अतिथिउवाच॥
विद्यामिष्टुपुदसचरायामिष्टुगुरुवचनानुयस्यामिष्टुधर्ममिष्टुपत्रंनुवा॥
॥पत्रदसयामिष्टुविद्याकृत्यामिष्टुमुप्रागयामिष्टुअखधिमननकालयामिष्टु
धर्म॥ ३५ ॥ इति किरितवाच॥ ॥ कथंउत्पद्यन्त्यसि कथंस्वप्तिनिवद
यन्॥ ॥ गथनकल्यानरुयिअगथनकल्यानयकाययककल्यानकल्यानरु
यिअगथनकल्यानरुयिअ॥ ३६ ॥ अतिथिउवाच॥ ॥ वक्रानकल्यान

२०

२०

दयकलवक्रानकल्यानविलवक्रायाकलान्साकदयककल्यानधननकल्यान
धान॥ ३७ ॥ इति किरितवाच॥ ॥ चतुर्वर्षलउपन्यकथंपूजनाविष्णुधकथं
जिर्थपुसंयनकथंपूजगुरुध॥ ॥ चतुर्ग्रामयादुपन्यनेमुक्तग्रामयादु
पूजतिर्थयादुपूजयाधर्मगथदय॥ ३८ ॥ अतिथिउवाच॥
चतुर्ष्वर्षपूजयसनअनविष्णुधकथंतिर्थपुसंयनगुरुअसदुसकी॥
चतुर्ग्रामदानयादाननरुक्तिदयनेमुयग्रामनदानयादनमिलअपून

धर्म

२९

तिथि सदानयादानकातिपुंल्य कृतदानयादाननत्र कृच्छिपूज ॥ ७२ ॥ इति
नडावाच ॥ ॥ किंपुंल्य नमनामानं गंगामानं च किदत्रं गयापिबुपुमान्यन
गामस्याज्जनिमवच ॥ ॥ नमनामानयादानकृपनगाममतिहसामयादाया
कृपुंल्य गंगामानयादाया कृपुंल्य गयापिबुधयानकृपुंल्य धर्मकृपुंल्य ॥ २९
॥ ॥ अतिथिडावाच ॥ ॥ वागानस्यामहापुन्यं नृनिजाम्मचनिमर्त्रं गयापिबुप
दान्यनपिबुधययकृति ॥ पूज्यचक्रियतं मूर्ध्नि फितवनि कानिधमरम

२९

मन्त्रासग्निमागृध्वं अलोकं युगच्छति माहापुन वागानासि ॥ ॥ अत्मानिर्म
लशुलमागयापिबुधयानपिबुलोकं स्वर्गं डानपुनयादानमृदुयादानका
तिपुकात्रनजिफशुलगामनित्यातिनसहामयादानस्वर्गं डान ॥ ७१ ॥ इति
नडावाच ॥ ॥ नस्यपिनागृहनासि मातानासि नृवचजगतरमिकथं चैवसुखं
नासिहृदयल ॥ ॥ नृमया कृतमामववददाकिजकं हतनामदल्यकृतम
स्वगच्छदयिडा ॥ ७२ ॥ अतिथिडावाच ॥ ॥ वधिमातापितायह्यपिबुमवत्र

धर्म

दद्यात्सहायस्य सुखं सान्निगृह्णत्वता ॥ ॥ माममहं कया मामवधिवव
महं कया ववहाने दंदा किं जमहं कया दयदा किं जमहं कया सुख कमतल ॥ १३
रुधिहि न उवाच ॥ ॥ केन कर्म ममहा इहं केन कर्म ममहा इहं केन कर्म ममहा इहं
२२ गहं केन कर्म पुवहता ॥ ॥ केन कर्म नमहा इहं रुधिरुल केन कर्म नमहा इहं
रुल केन कर्म नगहं वासुतु रुल केन कर्म न उथ उथं वल उल ॥ १४ ॥ ज
निथ उवाच ॥ ॥ देव पूजानन सुखं न पृथग्महा इहं अहं कानन मकगवत न

गहपूनयना ॥ ॥ दजलकिहा जमदया जहं रुधिरुल अन्नयान मया दान जहं
वासुतु पत्रमि पत्रधनं लहं कया दान वहु क कायान अघात्र नत्र कसुचन थम
उथं उथं वल उल ॥ १५ ॥ पत्रमि यात्रा जेनं लाल थम वम्यवच नत्रा जनिमा
घात्रमि जेनं लहं पूनयना ॥ १६ ॥ देवमान यया दान धर्म दयान सुख दयान धे
ममनूषं नाम्ना दज सुखमि ॥ १७ ॥ रुधिहि न उवाच ॥ ॥ कनि अं गुलमाका
सं कनि गगनगात्रका कथं मघ कयदात्रा कनि हल वमं धात्रा ॥ ॥ अकाश

धर्म

ग्वलकूदडा अस्मात्सगुलिनजगदडा म्यघसत्रखधत्रागुलितला ध्वपिधिग्वलकूदडा
 ॥ ११ ॥ अतिथि उवाच ॥ वडुलोगुलमाकासं दयागगनननका दमधत्रावय
 नमघासधनयवमुधत्रा ॥ अकासपत्रगुलिया अकासगगनगजिनेग्वलद
 नमघनडमगनकेयातत्रखधत्रामिधत्रावत ध्वपिधि कश्चकयादता ॥ १२ ॥
 रुधिमित्र उवाच ॥ मातुल यदिवाकन्या पिताजसकमानकं कुहिवाकसिदं
 कसदरुसमस्त्रवा ॥ ग्वलयाववमदलवमया सत्रिजनडत्यतिशिलध्वख

२२

२३

जिकनमाल ॥ १२ ॥ अतिथि उवाच ॥ तिलमधजथानलं काथमधरुतासनं इध
 मधघनं च वल्लनच वसजिविना ॥ हामलसचिकनगथयन सिममिगधवा
 नइहसधलगधवान ध्वनीथं नइहनाम्याना ॥ १० ॥ रुधिमित्र उवाच ॥
 अग्निकारवखवरायादव अतिथिथी हवता अदं वं पृथनेमिध अतिथिथ्यगृहनना
 ॥ हामयाकावलसं अतिथिथि वहुयू निनकपजायायजा ग्वरं वडा जिके गो ध्व
 नकडा अवलस ॥ ११ ॥ अतिथि उवाच ॥ नेचयूवमयरीं का कयात्रकं व

धर्म

शिवनं त्रानगृहं न लोकं दारवाधिवधिवर्जितं ॥ ॥ अथाश्चलं कनकं मन
यामेव या के मनया विस्तरवन्नराजाराकृतमनया त्रिहो गिनिमखं मनयान
दारवनमहा ५२ ॥ रुषिष्ठिर उवाच ॥ कनयास्वनलोकं विना दारो विवर्जितं
आरुमुषिष्ठिराणि न जगत्तुहमम ॥ त्रिकच्छेदस्वयया समनया वि
ना दारवनगच्छमनया च यथा दाल मखिपनि मननिमे त्रिकं लय कन गच्छ
मनया धर्कं धया ५३ ॥ अतिथि उवाच ॥ ग्राह्यं माहीतं मायानवविष्टं कि

२६

रावना न लोके माहिर्गमाया मत्सतं न राधिया ॥ लोहसमायानमाहयादतलल
जसमचोद मायानश्च मध्यपातलमं ज्ञानया कुरु माहा राजनिचयमश्च स्वस
संघर्कं ५४ ॥ राजायति ग्रहं घनं विस्वम्यादमभा प्रसां पूजं मां सवत्र लोकं न वत्रा
जायति ग्रहं ॥ राजायति ग्रहं कायमहा अथाप्रया मनया सव दधं कायं या
लान्महा हि दे राजायति ग्रहं कायमहिदं ५५ ॥ नद्यायां जलममृदं योपैप
पूयन्त्यग्रहं तस्मात्सजगं विद्या राजमकेन ह्यनं ॥ यत्तस्मान्ममवचो दहस्व

धर्म

ॐ सम्यग्धर्मादस्य धर्मस्य भावस्यादस्य वक्ष्यामि नृप ॥ ॥ धर्मिचलसमर्पणम्
 ज्ञातुमर्हति ज्ञानिनां धर्मो धर्मस्य क्रियापमूढा ज्ञाना ज्ञाया च स ज्ञानिनां धर्मिचलसमर्पणम्
 किं न च न क म न या अ पि प नि स न न या च पु लि ज न वे द न जि न ज न के र ज नि
 न म र या ॥ मि क्र खि वा ज च क्र मि सा डे ज नि मि क्र मि सा ज च क्र ज न मि मि न
 न ज ड ति मि क्र ज न मि मि न ज च क्र वे स्या ज ड ति मि क्र वे स्या ज च क्र के रा ज
 ज ड ति ॥ ८३ ॥ उ वि र्प तु न दि व सं का ना सर्व न प नि ग ना न च स ह स द न

चतिष्ठन्ति वाक्क्रना ॥ गता सहस्रवियुत्था मध्यमाना रुधिरि चिन्ता माना गता रागाः
काधवा केन वेदयता ॥ ॥ रुधिरि चिच्छलया लयदा डे विष्वा रुने मखा काय म
मालच्छलया लहिरियो नृच्छलया लया च्छमि निरुनि र्मवा क्रन सहस्रं ने कल वा क्र
न म इक्ष्वा य डुनू कल चि वा क्रन डाल ॥ ६० ॥ रुधिरि चिच्छलया ॥ यरुचि
चं सन कत्वा सर्व वियु गृह गत आधव पिबु पिबु च कथं म विपु पृथगा ॥
अरुचि चं सन याग कल डाल क्रध्व धूनि ता म म वा क्रन पति म खत दा डाल ॥

धर्म

वसन्तः ॥ ६६ ॥ मानं गच्छति कर्म रूपा गच्छति विधियम् चिकयत् ज्ञात्मन
स्वर्ग्यं माना रुधिदिन ॥ ॥ अथ च अलं गच्छति मनस्वला कर्म ज्ञात्रो जाडो
धर्मं ददन् ॥ अङ्गं अथ सद्गुणाय धर्मं चिकल पत्तं ॥ ६७ ॥ चर्हन् न ज्ञाति मां जात्र
सत्राय सत्रं लखि नं सहा लच वला वन न प्रह्न दा ह्ये मथा ॥ अपा पि म्मा ज्ञा गना दपि
पुष्टं दध्वा क गति य द्वाय स कर्व स पाप स च च नि ह्युत्तं हवत् ॥ ॥ अथ च अ
लं ज्ञाति न दया दा ज्ञा म कर्म याय ला क स गे थ ला य कर्म सहा ल स थ धि क्क म्मा ज्ञा

२३

गच्छति न दया या या पा पि म्मा दान स चान डा डा पुष्टं सुखा या क क्क जि म्मा नि दाना गुरू
या दान स म्मा क्क नि ह्युत्तं या म्मा क्क न धर्क ॥ ६८ ॥ ज्ञाति थ ड वा च ॥ ॥ अहं न व
पा पि म्मा ज्ञा न ग पा य क्क म्मा न्ना रुव क व व लि थ मि ह्य पा पि क्षा न ना धि य ॥ ॥ नि
पा पि द्वा स र्व ज्ञा न ग क्क म्मा या दान न्ना म म या क्क म्मा ध म या क्क थ म्मा न ज्ञा पा पि म्मा
य ॥ ६९ ॥ पत्ता व म्मा द्वा स वा क्क न्ना वा क्क नि व द य न म्मा स र्व म्मा ड क्क म्मा म्मा
धान दि य न ॥ ॥ अङ्ग स ल स या डा जि न र्व ला दा ग्ग थ नि मि ह्युत्तं अ थ यि न

पयादा निश्चयन चाकथं जिन स्वहादा जिनो खनमडा ॥ २२ ॥ अवाधिका लिक्कि
वमाधर्व साखि सतथा स्नान दानं ककन वे स्वयापि सुनोनाधिप ॥ ॥ अखार
यापु सुमासिक कडु ग्राखादन उग्र लायिडा काहिकयापु सुमासिक कडु मद्यन
२१ उग्र लायिडा ध्वने पव कोल सुमनान दजमया ककना जा पावि सुधयो ॥ २३ ॥ २१
हधिहि न उवाच ॥ पर्व च पूर्व मियादव चिन न च पुन पुन मम गह्वर थ कस
सरुल लवं च यमन ॥ ॥ हं अत्र दवता जिन क्रापा निह्यं विद्या मया दाकिन

जिजह्व्य धियात जिजह्व सुखल यादा जिन दमनि वियमाल ॥ २४ ॥ मया पुजा
च अर्ध च लवं दव जीति धे एव न अदम सरुलं गह्व पश्य मत्वं च यमन ॥ ॥ जि
पुजा अर्ध मच्छल पाल जति धे श्याडा विष्वा के माल ध्यानि जिजह्व अरुल शडा
यधुना कल पाल मन जिध्व कध के जिन दमनि विय विष्वा यमाल ॥ २५ ॥ धीन द
वमया प्राप्ता पश्य पुन दवता ॥ ॥ दमनि धनि जिन लादा चाष्टाल त्रय न जिक्
यादा गह्व विष्वा ॥ २६ ॥ किं च दना त्राय न वृक्षा विष्म मरु ग्यत्र न था चाष्टाल त्र

धर्म

पन पिताम गृह मागता ॥ १॥ केलपाल मु. यि बुला बुझा विमूल मरु खन लाय
धिद वलुल नूपन विद्यान. निव वधर्म लो. सुख जो दां डं वान मन सस्य ववन ओ
दस दय का डं विद्याय मा लध का डं ना ज शधि कि न न ला हात का कल पा डं विद्या नी
२५ ॥ धर्म वलुल न काय शधि कि न या सुख समे र्म स्वया डं अति दुष मान रुया डं
कल ॥ २६ ॥ धर्म उवाच ॥ ॥ सत्य संस्य पुन सत्यं सुख सां ल विहा ल द. अहं वच
पिता पुन सुख म व श धि कि न ॥ ॥ रु श धि कि न. कन व वधर्म निख डं स म र्म

२५

रु अया डं वा द क. निम्ब यन जि काय क. कन व व जिख डं र्वा ॥ २७ ॥ त्वया कि लि
मया अत्वा आगता हं गृह वत. जया ध्व जहं पृथ व अहं द वा श धि कि न ॥ ॥ क
न कि लि पता पर व दं का डं कन कया दान स जि डं या. ग्व मया. अथ स जहं यात. डं क
या द डं जि जि डं क या ध कं धर्म न आ य म देत ॥ १०० ॥ रु धि कि न उवाच ॥ ॥
अदम सद न धर्म अदम सद लं न प. अदम सद ल ना अ पिताम गृह मागता ॥
जि जि रु या या य नि सद ल श ल. जि न प या का या रु ल थ नि द न. निव वृ श क स वि

धर्म

यादानि निमग्न्यां मरुलशला ॥ १०१ ॥ ममग्न्येव धनं यद्यवा दमनरुव
 २, सवपाप विनिर्मकं प्राप्तिमायवनागुनु ॥ ॥ निव्यायाधनपदविलंथनि
 समस्तपापन कालतलां, निववृशदवंगुनु कलपालस्यन, निनआयाहन ॥ १०२ ॥
 धर्मचेवाचा ॥ ॥ पत्रधनपजिहि सा जस्यन स्ययवतस्य जला रक्षनला रचनु
 ननिनमृक्तिनजन ॥ ॥ धनं नडाधेय, मवदूनकं नडाधेय पाप, यमयाः
 यगुलमनिश्या डाचानि डा लारसला रमइक्या लार दयिडा ध्वनं नमृकि

महोदयः प्रज्जनासि यः ॥ १०३ ॥ पत्रद्वयपत्रद्विसाज्ञाय नमः पुनरुक्तं अलोकं अलोकं
नलो हं च गतानि मूक्तिने जनं ॥ ॥ मातृयाधनः भवयाजिडासंज्ञानि किल
नमवहलपुत्रयाः ध्यानविधिनमूक्तिजानिडा ॥ १०४ ॥ साधुसाधु चित्तं जिवसु यच
वगजह्वचः हिनं हिनं हिनं सत्यः पुनराधनिनीजतां ॥ ॥ देसाधिहितकनगा
पिडादधिशयमासकनरवडाखे हानाकनजह्वरवडासत्यहितरवडापुनरुक्त
नगडानाश्च मयधन ॥ १०५ ॥ आसाय्यदेवलाकरवधमवाक्यदयापत्रः देवलोके

धर्म

लिपिर्गन्ध्रा कानि पूतमाहानगत्र दनपि थ्मति डरु लेहु डानेयानात्रावुषिवन
त्रासं यामनतु त्रिधम विरु उत्पतिश्या ड थमनं वाया डाम पूरु सिधय
कादिनहला मुला ॥ ॐ ॥ थस्फुसूनानं गीहयायम इरा ह्यान साप
चमाहापापला यिडाहला मुला ॥ ॐ ॥ मंगलं वकुसुमव्याकारं मुहं

अ. ३५. क. ३५	786		
--------------	-----	--	--

३९

३९